3 अशोक के चौदह शिलालेख

गिरनार शिलालेख

शिलालेखी साहित्य में सबसे प्राचीन एवं ऐतिहासिक शिलालेख सम्राट अशोक के हैं। ई.पू. 269 में राज्याभिषेक के 12 वर्ष पश्चात् सम्राट अशोक ने गिरनार, कालस, धौली, जौगढ़ एवं मनसेहरा आदि स्थानों पर अनेक लेख उत्कीर्ण कराए हैं। सम्राट अशोक के कुछ लेख शिलालेख हैं, कुछ स्तम्भ लेख और कुछ गुफा लेख हैं। अशोक के मुख्य शिलालेखों की संख्या चौदह हैं। अशोक के इन चतुर्दश शिलालेखों का एक समूह सौराष्ट्र में जूनागढ (गिरनार का मध्यकालीन नाम) से लगभग एक मील की दूरी पर गिरनार की पहाड़ियों पर स्थित है। यह अभिलेख जिस शिला पर उत्कीर्ण है, वह शिला त्रिभुजाकार ग्रेनाइट पत्थर की है, जिसका क्षेत्रफल लगभग 100 वर्गफुट है। शिलाखण्ड के उत्तरपूर्वीय मुख पर अशोक के चतुर्दश शिलालेख दो स्तम्भों में विभाजित होकर उत्कीर्ण है। दोनों स्तम्भों के बीच में एक रेखा भी खिंची हुई है। बायीं ओर के स्तम्भ में प्रथम पांच अभिलेख और दायी ओर के स्तम्भ में छठवें से लेकर बारहवां तक उत्कीर्ण है। त्रयोदश व चतुर्दश अभिलेख पंचम तथा द्वादश के नीचे खुदे हुए हैं। अशोक के अभिलेखों की भाषा मागधी प्राकृत है, जो पालि के अधिक निकट है। कहीं कहीं संस्कृत के रूपों का भी समावेश है। शाहबाजगढ़ी और मानसेहरा के शिलालेख खरोष्ठी लिपी में हैं तथा शेष ब्राह्मी में है।

अशोक के प्रमुख 14 शिलालेखों में से प्रथम, द्वितीय एवं द्वादश अभिलेख यहां प्रस्तुत हैं। इनमें जीवदया, मांसभक्षण–निषेध, चिकित्सासेवा, वृक्षारोपण, धर्मसमन्वय एवं दान आदि के कार्यों पर प्रकाश डाला गया है।

प्रथम शिला लेख

1. इयं धमलिपि देवानंप्रियेन
2. प्रियदसिना राञा लेखापिता इध न किं
3. चि जीवं आरभित्पा प्रजूहितव्यं
4. न च समाजो कतव्यो बहुकं हि दोसं
5. समाजम्हि पसति देवानंप्रिय प्रियदसि राजा
6. अस्ति पि तु एकचा समााजा साधुमता देवानं
7. प्रियस प्रियदसिनो राञो पुरा महानसम्हि
8. देवानंप्रियस प्रियदसिनो राञो पुरा महानसम्हि
9. बहूनि प्राणसतसहस्त्रानि आरभिसु सूपाथाय
10. स अज यदा अयं धमलिपी लिखिता ती व प्रा
11. णा आरभरे सूपाथाय द्वो मोरा एको मगो सो पि
12. मगो न ध्रुवो एते पि प्राणा पछा न आरभिसरे

(हिन्दी अनुवाद)

1–2. देवानांप्रिय प्रियदर्शी राजा ने यह धर्मलिपि लिखवाई है।

3. यहाँ किसी भी प्राणी को मारकर होम नहीं करना चाहिए।

4. 'समाज' का आयोजन नहीं करना चाहिए। देवानांप्रिय,

5–12. प्रियदर्शी राजा 'समाज' में अनेक दोष देखते है। देवानांप्रिय प्रियदर्शी ने कुछ एक 'समाजो' को ही अच्छा माना है। देवानांप्रिय प्रियदर्शी के रसोईघर में पहले प्रतिदिन लाखों प्राणी सूप के उद्देश्य से मारे जाते थे। जबकि आज यह धर्मलिपि लिखी गई है, सूप के लिये केवल तीन ही प्राणी मारे जाते हैं– दो मोर तथा एक हरिण। हरिण का वध भी सदैव नहीं होगा। कुछ समय

पश्चात् ये तीन प्राणी भी नहीं मारे जाया करेंगे।

टिप्पणियाँ –

1. धर्मलिपि – धर्मलिपि अथवा धार्मिक लिपि से तात्पर्य राजाज्ञा से है जो कि प्रजाजनों को कर्त्तव्याकर्त्तव्य का बोध कराने के उद्देश्य से लिखवाई गई है।

2. देवानप्रियस (देवानां प्रिय) 'अलुक् तत्पुरूष' से 'देवानांप्रिय' शब्द का अर्थ देवताओं का प्यारा है। परन्तु यहाँ मौर्य सम्राट अशोक की सम्मानसूचक उपाधि है जिसका समासविच्छेद नहीं किया जा सकता है। भट्टोजिदीक्षित से परवर्ती वैयाकरणों ने इस शब्द का अर्थ 'मूर्ख' तथा 'पशुयाजक' किया है क्योंकि निबुर्द्धि पशु–पूजक ही मूर्खवत् आचरण करता है। भट्टोजिदीक्षित से परवर्ती वैयाकरणों ने केवल षष्टयन्त 'देव' शब्द से समास का अभाव माना है। निन्दार्थक 'मूर्ख' अर्थ के मूल में मूलतः बौद्धो के प्रति समाज में असम्मान प्रदर्शित करना था।

3. पियदशि अशोक का ही एक सम्मानसूचक नाम (प्रियदर्शी)

– ऐसे समाज उत्सव जहां जुआ आदि अनाचारण होता रहेगा।

4. महानसम्हि (महान से)– भोजनगृह से तात्पर्य खाने के उद्देश्य से 'भोजनागारों' से है। केवल अशोक का 'भोजनागार' अर्थ अभीष्ट नहीं है, अपितु सारे राज्य के भोजनागारों से है।

5. गुजरात में गिरिनार गिरनार अथवा गिरिनगर नाम से जैनियों का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है। रेलवे स्टेशन से लगभग 2 किलोमीटर की दूरी पर गिरनार पर्वत की चढाई आरम्भ होने के स्थल पर ही विशाल शिला पर अशोक के 14 लेख खुदे है। उसी पर रूद्रदामन तथा स्कंधगुप्त के अभिलेख भी हैं। इस शिला पर 800 वर्षों का इतिहास खुदा हुआ है। पुरातत्त्व विभाग ने इस शिलाखण्ड को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से इसके ऊपर एक पक्की कंकरीट की छत बनवा दी है। परन्तु दुःख की बात है कि वहां पर नियुक्त पुरातत्त्व विभाग के कर्मचारी यात्रियों को भ्रमित करने के लिए उस शिला खण्ड का पीर साहब की मजार परोक्ष रूप से यात्रियों से वहाँ दान दक्षिणा आदि मांगते रहते हैं।

6. प्रस्तुत अभिलेख तिथि विहीन है।

1. विजितम्हि–नियंत्रण के आधीन राज्य अर्थात् अपना राज्य।

2. प्रचन्त (प्रत्यन्त), सीमावर्ती प्रदेश जिनकी सीमाएं मौर्य सम्राट के राज्य से मिलती थी।

3. चोड़ा (चोल राज्य) पाडा (पाण्डव राज्य), केतलपुत्र (केरलपुत्र), तम्बपण्णी, (ताम्रपर्णी)–जगन्नाथपुरी के पार समुद्र तट के बीच बसा हुआ टापू।

4. सतियपुत (सत्यपुत्र) राज्य की स्थिति संभवतः मालावार प्रदेश में रही होगी।

5. प्रस्तुत अभिलेख अशोक के जनोपयोगी तथा कार्यों का उल्लेख करता है जिनसे मार्गों पर छायादार फलों वाले वृक्ष लगवाना है। इसके अतिरिक्त मनुष्यों व पशुओं की चिकित्सा में काम आने वाले पेड़ पौधे भी अपने साम्राज्य की सीमाओं से लगने वाले देशों में भी लगवाये।

6. यह लेख भी तिथि विहीन है।

द्वितीय शिलालेख

1. सर्वत विजितम्हि देवानंप्रियस प्रियदसिनो राञो
2. एवमपि प्रचंतेसु यथा चोडा पाडा सतियपुतो केतलपुतो आतंब
3. पंणी अंतियको योनराजा ये वा पि तस अंतियकस सामीपं
4. राजानो सर्वत देवानंप्रियस प्रियदसिनो राञो द्वे चिकीछा कता
5. मनुसचिकीछा च पसुचिकीछा च ओसुढानि च यानि मनुसोपगानि च
6. पसोपगानि च यत यत नास्ति सर्वत हारापितानि च रोपापितानि च
7. मूलानि च फलानि च यत यत नास्ति सर्वत हारापितानि च रोपापितानि च
8. पंथेसू कूपा खानपिता व्रछा च रोपापिता परिभोगाय पसुमनुसानं।

हिन्दी अनुवाद

1–3. देवानांप्रिय प्रियदर्शी राजा के सभी विजित (प्रदेशों) भू–भाग में तथा सीमावर्ती चोल, पाण्ड्य, सत्यपुत्र, केरलपुत्र, ताम्रवर्णी तथा यवनराज अन्तियक तथा अन्तियक के आसपास जितने भी अन्य राजा

है, उन सबके।
4–6. राज्यों में देवानांप्रिय प्रियदर्शी राजा ने दो प्रकार की चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध कराई हैं– 1. मनुष्यचिकित्सा तथा 2. पशुचिकित्सा। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए जो जो औषधियाँ मनुष्यों एवं पशुओं के लिये उपयोगी हैं, जहाँ जहाँ नहीं हैं (थी) सर्वत्र उपलब्ध करवाई तथा
7–8. उगाई गई हैं तथा मूल (कन्दमूल) और फल जो जहाँ–जहाँ नहीं है (थे) सब मंगवाए गए तथा उगवाए गए हैं। मनुष्यों तथा पशुओं के परिभोग (प्रयोग) के लिये मार्गों में कुएं खोदे गए हैं। तथा वृक्ष लगवाए गए हैं।

टिप्पणियाँ –

1. विजितम्हि–नियंत्रण के आधीन राज्य अर्थात् अपना राज्य।
2. प्रचन्त (प्रत्यन्त), सीमावर्ती प्रदेश जिनकी सीमाएं मौर्य सम्राट के राज्य से मिलती थी।
3. चोड़ा (चोल राज्य) पाडा (पाण्डव राज्य), केतलपुत्र (केरलपुत्र), तम्बपण्णी, (ताम्रपर्णी)–जगन्नाथपुरी के पार समुद्र तट के बीच बसा हुआ टापू।
4. सतियपुत (सत्यपुत्र) राज्य की स्थिति संभवतः मालावार प्रदेश में रही होगी।
5. प्रस्तुत अभिलेख अशोक के जनोपयोगी तथा कार्यों का उल्लेख करता है जिनसे मार्गों पर छायादार फलों वाले वृक्ष लगवाना है। इसके अतिरिक्त मनुष्यों व पशुओं की चिकित्सा में काम आने वाले पेड़ पौधे भी अपने साम्राज्य की सीमाओं से लगने वाले देशों में भी लगवाये।
6. यह लेख भी तिथि विहीन है।

द्वादश अभिलेख (समवायो एव साधु)

1. देवानं पिये पियदसि राजा सव पासंडानि च पवजितानि च घरस्तानि च पूजयति दानेन च विविधाय च पूजाय पूजयति ने
2. न तु तथा दानं व पूजा व देवानं पियो मंञते यथा किति सारवढी अस सबपासंडानं सारवढी तु बहुविधा
3. तस तु इ दं मूलं य वचगुती किंति आत्पपासंडपूजा व पर पासंड गरहा व नो भवे अप्रकरणम्हि लहुका व अस
4. तम्हि तम्हि प्रकरणे पूजेतया तु एवपर पासंडा तेन तेन प्रकमरणेन। एवं करूं आत्मपासंडं च बढयति पासंडस च उपकरोति।
5. तदंञथा करोतो आत्मपाषंड च छणति परपासंडास च पि अपकरोति यो हि कोचि आत्मपासंडं पूजयति परपासंडं व गहरति।
6. सवं आत्पपासंडभतिया किंति आत्पपासंडं दीपमेय इति सो च पुन तथ करातो आत्पपासंडं बाढतरं उपहनाति त समवायों एव साधु
7. किंति अञमंञस धंमं सुणारू च सुसंसेर च एवं हि देवानंपियस इछा किंति सवपासंडा बहुस्रुता च असुकलाणागमा च असु।
8. ये च तत्र तत् प्रसंना तेहि वतव्यं देवानंपियो नो तथा दानं व पूजां व मंञते यथा किंति सारवढी अस सर्वपासांडानं बहका च एताय
9. अथा व्यापता धंममहामाता च इथीझखमहामाता च वचभूमीका च अञे च अञे च निकाया अयं च एतस फल य आत्प पासंडवढी च होति धंमम च दीपना

हिन्दी अनुवाद –

1. देवानांप्रिय, प्रियदर्शी राजा सभी धार्मिक सम्प्रदाओं और प्रव्रजितों (साधु–जीवन वालों) और गृहस्थों को पूजता है तथा वह दान और विविध प्रकार की पूजा से उन्हें पूजता हैं।
2. किन्तु दान और पूजा को देवानांप्रिय उतना नहीं मानता, जितना इस बात को (महत्व देता है।) कि सभी सम्प्रदायों के सार की वृद्धि हो।
3. सार–वृद्धि कई प्रकार की होती है। किन्तु उसका यह मूल है वचन का संयम। कैसे?अनुचित अवसरों पर अपने सम्प्रदाय की प्रशंसा और दूसरों के सम्प्रदाय की निन्दा नहीं होनी चाहिए।

4. किसी–किसी अवसर पर (कारण से) हलकी (आलोचना) होना चाहिए। किन्तु उन–उन प्रमुख कारणों से दूसरे सम्प्रदाय पूजे जाने चाहिए। ऐसा करते हुए अपने सम्प्रदाय को बढाता है तथा दूसरे सम्प्रदाय का उपकार करता है।
5. इसके विपरीत करता हुआ (व्यक्ति) अपने सम्प्रदाय को क्षीण करता है और दूसरे के सम्प्रदाय का भी अपकार करता हैं।
6. जो कोई (व्यक्ति) अपने सम्प्रदाय की पूजा करता है तथा दूसरे सम्प्रदाय की निन्दा करता है–सब अपने सम्प्रदाय की भक्ति के कारण। कैसे?कि किस प्रकार अपने सम्प्रदाय का प्रयचार किया जाए वह ऐसा करता हुआ अपने सम्प्रदाय की बहुत हानि करता है।
7. इसलिए (समवाय) ही साधु (श्रेष्ठ) है। कैसे?एक–दूसरे के धर्म को सुनना और सुनाना चाहिए। ऐसी ही देवानांप्रिय की इच्छा है कैसी?कि सभी सम्प्रदाय बहुश्रुत हों और कल्याणमयी हों।
8. जो अपने–अपने सम्प्रदाय में अनुरक्त हों, वे (दूसरे से) कहें – देवानांप्रिय दान और पूजा को उतना नहीं मानते जितनाा कि इस बात को कि सब सम्प्रदायों में सार की वृद्धि हो।
9. इस प्रयोजन के लिए बहुत से धर्ममहामात्र, और स्त्री–अध्यक्ष –महामात्र, व्रजभूमिक (यात्री–रक्षक) और अन्य (अधिकारी) वर्ग नियुक्त हैं। इसका यह फल है कि अपने सम्प्रदाय की वृद्धि और धर्म का दीपन (प्रचार) होता है।

अभ्यास –

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. अशोक ने किस प्रकार के 'समाज' को नहीं करने का आदेश दिया?
2. अशोक ने मांस भक्षण का निषेध कहां से किया?
3. अशोक के समय में चिकित्सा की क्या व्यवस्था थी?
4. पथिको ंके लिए क्या सुविधाएं थी?
5. अशोक के मत में 'सारवृद्धि का क्या अर्थ्ज्ञ है?
6. 'समवाय' का क्या अर्थ है?

2. निबंधात्मक प्रश्न –

(क) अशोक ने धर्म–समन्वय के लिए कौन–कौन से अधिकारी नियुक्त किये थे?
(ख) अशोक के द्वारा जन–कल्याणकारी कार्यों का वर्णन कीजिए।
(ग) शिलालेखों की भाषा एवं उनकी विशेषताएँ बताइए?